Con. 3. 5.3.47
750

अंक 5
संख्या 2

शुक्रवार,
15 अगस्त,
सन् 1947 ई.

भारतीय विधान-परिषद्

के

वाद-विवाद

की

सरकारी रिपोर्ट

(हिन्दी संस्करण)

विषय-सूची

	पृष्ठ
1. शुभकामना के संदेश	1
2. लार्ड माउन्टबैटन का भाषण	4
3. अध्यक्ष का भाषण	10
4. राष्ट्रीय पताका का उत्तोलन	17

भारतीय विधान-परिषद्

शुक्रवार, 15 अगस्त, सन् 1947 ई॰

भारतीय विधान-परिषद् कान्स्टीट्यूशन हाल नई दिल्ली में 10 बजते ही समवेत हुई। अध्यक्ष (मा॰ डा॰ राजेन्द्र प्रसाद), भारत के गवर्नर, श्रीमान् लार्ड माउंटबैटन तथा श्रीमती माउंटबैटन के साथ परिषद्-भवन में प्रविष्ट हुये।

शुभकामना के संदेश

***अध्यक्षः** कतिपय प्राप्त सम्वादों को मैं पढ़कर सुना देता हूं।

(1) **संयुक्त राज्य के प्रधानमंत्री का तार, पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नामः**

''इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं और संयुक्त राज्य के मंत्रिमंडल के मेरे सहकर्मी, भारतीय सरकार और भारतीय जनता के प्रति अपनी प्रसन्नता और शुभकामना समर्पित करते हैं। हमारी यह आन्तरिक अभिलाषा है कि भारतवर्ष सुख-शान्ति के साथ आगे बढ़ता जाए और विश्व की शान्ति और समृद्धि को समुन्नत बनाने में हाथ बंटाये।''

(2) **कैंटरबेरी के आर्कबिशप का संदेश, पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नामः**

''इस समय जब कि इंडिया और पाकिस्तान स्वतंत्र राज्य बन गए हैं और अपने शासन का सारा दायित्व उन्होंने अपने ऊपर ले लिया है, इस देश की ईसाई जनता की ओर से मैं आपको अपनी प्रसन्नता और शुभकामना समर्पित करता हूं।''

(3) **चीन प्रजातंत्र के प्रेसीडेण्ट जनरल च्यांगकाईशेक का संदेश, इंडिया के प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नामः**

''इस शुभ अवसर पर जब भारत की जनता स्वतंत्रता के एक नवीन युग का महोत्सव मना रही है, उस उज्जवल एवं महती सफलता

---

*इस चिह्न का अर्थ है कि यह अंग्रेजी वक्तृता का हिन्दी रूपान्तर है।

[अध्यक्ष]

के लिए, जिसकी प्राप्ति के लिए आपने तथा महात्मा गांधी ने इतनी प्रमुखता और उदारता से भाग लिया है और जिसके संबंध में मुझे विश्वास है कि वह स्वाधीनता, समानता तथा प्रगति के प्रति सारे उद्योगशील राष्ट्रों के लिए प्रेरणा का एक महान् साधन सिद्ध होगी। मैं आपको तथा आपके देशवासियों को हार्दिक बधाई देता हूं। सफलता एवं महानता से परिपूर्ण भारत के उज्जवल भविष्य के प्रति मेरी शुभकामनाएं स्वीकार कीजिएगा।''

(4) कनाडा के प्रधान मंत्री का संदेश, भारत के प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''इस अवसर पर, जब कि भारत अपना शासन पूर्णतः अपने हाथ में ले रहा है, मुझे इस बात की बड़ी ही प्रसन्नता है कि मैं आपको और आपके द्वारा भारतीय सरकार और जनता को, कनाडियन सरकार और वहां की जनता की हार्दिक शुभकामनाएं समर्पित करता हूं।

(5) आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री का संदेश, भारत के प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''इस ऐतिहासिक अवसर पर जिसका महोत्सव 15वीं अगस्त को मनाया जा रहा है, मैं भारतीय सरकार और भारतीय जनता को आस्ट्रेलिया की सरकार और वहां के निवासियों की शुभकामनाएं समर्पित करता हूं।

आस्ट्रेलिया के लोग इस बात की खुशी मना रहे हैं कि आपके देश ने एक स्वतंत्र सर्वाधिकार सम्पन्न राष्ट्र का पद प्राप्त किया है और ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का साथी सदस्य होने पर आपका स्वागत करते हैं।

विश्वासपूर्वक यह आशा की जाती है कि आपकी परम्परा, आपकी प्राचीन संस्कृति और भावना, जिससे इस परिवर्तन काल को सुगम बनाने की आपको प्रेरणा प्राप्त होती है, भारतवासियों के मंगलमय भविष्य और उनकी महत्ता को सुरक्षित रखेंगी।''

(6) नानकिंग की प्रबन्धकारिणी सभा युवान के सभापति का संदेश, भारत के प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''इस ऐतिहासिक अवसर पर जब भारतवर्ष अपनी चिरसंचित अभिलाषा प्राप्त कर रहा है, मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैं आपको तथा भारत के लोगों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूं। चीन के लोगों को इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि एशिया महाद्वीप में एक और महान् राष्ट्र का अभ्युदय हुआ है। भारत और चीन की मिली हुई सीमा 2,000 मील लंबी है और इन दोनों देशों का पारस्परिक संबंध कई शताब्दियों तक घनिष्ट और मैत्रीपूर्ण रहा है। हम दोनों राष्ट्र गत महायुद्ध में एक साथ थे और निस्संदेह हम दोनों ही अपने विश्वशांति के उद्देश्य की ओर अग्रसर होते जायेंगे। आपकी सतत् सफलता तथा भारतवासियों के सुख और समृद्धि के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभेच्छायें समर्पित करता हूं।''

(7) इंडोनेशिया के प्रजातंत्र की ओर से डा॰ स्योडार्सनो का संदेश, पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''स्वाधीन भारतीय राष्ट्र की स्थापना पर इंडोनेशिया के प्रजातंत्र को इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि वह उसके प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता, सहानुभूति और मैत्री की भावना व्यक्त करता है।

इंडोनेशियन प्रजातंत्र भारतवर्ष को अपना मित्र समझता है जिसने उसके संकट और कष्ट के काल में सदा सहायता की है और देगा। दोनों देशों की राष्ट्रीयता का आधार मानवता है, अतः इंडोनेशिया यह आशा कर सकता है कि सन्निकट भविष्य में दोनों देशों के बंधन और प्रगाढ़ हो जायेंगे—न्याय और शांति के लिए तथा उन लाखों मनुष्यों के सुख-स्वातंत्र्य के लिए, जो एक दीर्घकाल से वैभव और सम्पत्ति की अपार राशि रखकर भी दीन-हीन जीवन व्यतीत कर रहे हैं—इन दोनों देशों का मैत्री-बंधन और प्रगाढ़ हो जायेगा।

भारतवासी वर्षों से प्रख्यात नेताओं के नेतृत्व में रहे हैं और निस्संदेह वे और अधिक सुखद और मंगलमय भविष्य की ओर अग्रसर

[अध्यक्ष]

होते जा रहे हैं। भारत न केवल न्याय और सुख-समृद्धि का देश होगा बल्कि एशिया की शांति का वह प्रधान रक्षक होगा।

इंडोनेशियन प्रजातंत्र की सरकार तथा वहां के निवासी, श्रीमान् को, आपकी सरकार को और आपके देशवासियों को इस ऐतिहासिक अवसर पर सुख-समृद्धि के लिए अपनी हार्दिक शुभेच्छायें समर्पित करते हैं।''

(8) नेपाल सम्राट के मंत्री का संदेश, पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''भारतीय राज्य की स्थापना पर मेरे सहकर्मी तथा मैं हार्दिक अभिनन्दन व्यक्त करते हैं। राज्य और वहां के निवासियों की सुख-समृद्धि के लिए हम अपनी शुभकामनायें समर्पित करते हैं।''

(9) ओसलो से नार्वे के प्रधान मंत्री तथा स्थानापन्न वैदेशिक मंत्री का संदेश पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''भारतवासियों के इस राष्ट्रीय महोत्सव के महान् दिवस पर मुझे इस बात का गौरव है कि मैं आपको आपके देश की सुख एवं समृद्धि के लिए अपनी शुभकामना भेजता हूं।''

लार्ड माउंटबैटन का भाषण

***अध्यक्ष:** क्या मैं 'योर ऐक्सीलैंसी' से सभा के समक्ष भाषण देने को कहूं?

***श्रीमान गवर्नर-जनरल:** विधान-परिषद् के अध्यक्ष और सदस्यगण, आज मैं आपको सम्राट का एक संदेश देना चाहता हूं। सम्राट का संदेश इस प्रकार है:

''इस ऐतिहासिक दिन, जबकि भारत ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में एक स्वतंत्र और स्वाधीन उपनिवेश के रूप में स्थान ग्रहण कर रहा है, मैं आप सबको अपनी हार्दिक शुभकामनाएं भेजता हूं।

आपके इस स्वाधीन महोत्सव में प्रत्येक स्वतंत्रता-प्रिय राष्ट्र भाग लेना चाहेगा, क्योंकि पारस्परिक स्वीकृति द्वारा सत्ता का जो यह हस्तांतरण हुआ है, उससे एक ऐसे महान् लोकतंत्रीय आदर्श की

पूर्ति हुई है जिसे ब्रिटेन और भारत दोनों देशों के लोग समान रूप से कार्यान्वित करने के लिए कटिबद्ध रहे हैं। यह बड़ी ही उत्साहवर्धक बात है। यह सब शांतिपूर्ण परिवर्तन द्वारा सम्पन्न हो सका है।

भविष्य में आपको बड़ी जिम्मेदारियों का भार वहन करना है, किंतु जब मैं आपके द्वारा प्रकट की गई राजनीतिज्ञता तथा किए गये त्यागों का विचार करता हूं, तो मुझे विश्वास हो जाता है कि भविष्य का भार आप समुचित रूप से वहन कर सकेंगे।

मैं प्रार्थना करता हूं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा का आशीर्वाद आपको प्राप्त हो और आपके नेता आने वाले कार्यों को बुद्धिमत्तापूर्वक कर सकें। मेरी यह भी प्रार्थना है कि संसार के राष्ट्रों के प्रति संबंधों में आप मैत्री, सहिष्णुता और शांति की भावना से अनुप्राणित हो सकें। अपनी जनता की समृद्धि तथा मानव जाति के कल्याण के लिए आपके प्रयत्नों में मेरी सहानुभूति सदा आपके साथ रहेगी।''

छः महीने से भी कम हुआ कि जब श्री एटली ने मुझसे भारत का अंतिम वायसराय होने को कहा था। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि यह कोई सरल कार्य न होगा, क्योंकि सम्राट की सरकार जून 1948 तक भारतीयों को सत्ता हस्तांतरित करने का निश्चय कर चुकी थी। उस समय बहुतों ने अनुभव किया था कि सम्राट की सरकार ने सत्ता हस्तांतरित करने के लिए बहुत थोड़ी अवधि रखी थी। प्रश्न था कि यह महान् कार्य 15 महीनों के अंदर किस तरह समाप्त हो?

भारत में आये मुझे एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि मैंने अनुभव किया कि जून 1948 की अवधि बहुत थोड़ी नहीं बल्कि बहुत अधिक थी। साम्प्रदायिक मनमुटाव तथा उपद्रव इतनी अधिक मात्रा में बढ़ गये थे कि इंग्लैंड से रवाना होते समय मैं उनका अंदाजा नहीं लगा सका था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि सम्पूर्ण उप-महाद्वीप में अव्यवस्था से बचना है तो शीघ्र ही कुछ न कुछ निर्णय होना चाहिये।

[श्रीमान् गवर्नर-जनरल]

मैंने सभी दलों के नेताओं से तुरंत बातचीत प्रारम्भ कर दी और इसके परिणामस्वरूप 3 जून वाली योजना सामने आई। इसके स्वीकार किये जाने को संसार भर में राजनीतिज्ञता का एक उत्तम उदाहरण कहा गया है। नेताओं से प्रत्येक अवस्था में प्रकट रूप से बातचीत द्वारा ही इस योजना का विकास हुआ। इसकी सफलता का मुख्य श्रेय भी इन नेताओं को ही है।

मुझे विश्वास है कि ऐसी परिस्थिति के लिए, जिसमें समस्यायें जटिल हों और उत्तेजना इतनी अधिक हो, प्रकट रूप से बातचीत करना ही उपयुक्त मार्ग हो सकता था। मैं यहां नेताओं की बुद्धिमत्ता, सहनशीलता तथा सद्भावनापूर्ण सहायता की प्रशंसा करना चाहता हूं, जिसके कारण पूर्व निर्धारित समय से साढ़े दस महीने पहले ही सत्ता हस्तांतरित की जा सकी।

जिस बैठक में 3 जून वाली योजना स्वीकृत हुई थी उसमें मैंने नेताओं के आगे विभाजन के शासन संबंधी परिणामों के विषय में एक विचारपत्र उपस्थित किया था और उसी समय हमने इतिहास की एक सबसे बड़ी शासन संबंधी कार्रवाई करने के लिए एक व्यवस्था भी स्थापित कर दी थी। यह कार्रवाई 40 करोड़ निवासियों वाले इस उप-महाद्वीप के बटवारे और ढाई महीने से भी कम समय में दो स्वाधीन सरकारों को सत्ता हस्तांतरित किये जाने के संबंध में थी। इन बातों को शीघ्रता से सम्पन्न करने का कारण यह था कि एक बार विभाजन का सिद्धान्त स्वीकार करने के बाद शीघ्रातिशीघ्र उसे कार्यान्वित करने में ही सब दलों का हित था। सच तो यह है कि पहले जितनी शीघ्रता से काम होना सम्भव समझा जाता था, वह हुआ उससे भी कुछ कम समय में। इस आश्चर्यजनक परिणाम को प्राप्त करने के लिए जिन मंत्रियों तथा कर्मचारियों ने रात-दिन लगकर परिश्रम किया है, उनकी जितनी ही प्रशंसा की जाये थोड़ी है।

मैं भली-भांति जानता हूं कि स्वाधीनता जिस प्रसन्नता को लाई है वह आपके हृदयों की इस उदासी से कुछ फीकी पड़ गई है, क्योंकि यह (स्वाधीनता) अखंड भारत में न आ सकी। बटवारे के शोक ने आज की घटनाओं के आल्हाद को कुछ कम कर दिया है। आपके नेताओं ने कठिन निर्णय करके जिस प्रकार देशभक्तिपूर्ण राजनीतिज्ञता का परिचय दिया है, उसी प्रकार आपने अपने नेताओं का समर्थन करके उदारता तथा यथार्थता की भावना का परिचय दिया है।

मेरी स्थिति को सहानुभूतिपूर्वक समझकर इन राजनीतिज्ञों ने मुझे सदा के लिए अपना ऋणी बना लिया है। उदाहरण के लिए, उन्होंने अपनी इस मूल मांग पर

जोर नहीं दिया कि ट्रिब्यूनल का अध्यक्ष मैं बनूं। इसके अलावा पंजाब और बंगाल के बटवारे की जिम्मेदारी से भी मुझे छुटकारा देना उन्होंने आरंभ ही में स्वीकार कर लिया। उन्होंने ही सीमा-कमीशन के अध्यक्ष तथा सदस्यों का चुनाव किया, उन्होंने ही यह निश्चय किया कि कमीशन किन बातों पर विचार करे और निर्णय को अमल में लाने का दायित्व भी उन्होंने वहन किया। आप यह अनुभव करेंगे कि अगर नेता ऐसा न करते तो मैं बड़ी असम्भव स्थिति में पड़ जाता।

अब मैं देशी रियासतों की समस्या को लेता हूं। 3 जून वाली योजना में केवल ब्रिटिश भारत में सत्ता-हस्तांतरण की व्यवस्था की गई थी। रियासतों के संबंध में तो सिर्फ एक पैराग्राफ में यह कहा गया था कि सत्ता हस्तांतरित होने पर रियासतें, जिनकी संख्या 565 है, स्वतंत्र हो जायेंगी। यह एक और महती समस्या थी और इस संबंध में सभी तरफ आशंका थी। परंतु रियासत-विभाग स्थापित होने पर सम्राट के प्रतिनिधि की हैसियत से मैं इस जटिल समस्या को भी हाथ में ले सका। रियासत-विभाग के प्रधान दूरदर्शी राजनीतिज्ञ सरदार वल्लभभाई पटेल को इसका श्रेय प्राप्त है कि एक ऐसी योजना तैयार हो सकी जो मुझे भारत के स्वाधीन उपनिवेश के लिए तथा रियासतों के लिए–दोनों के लिए–समान रूप से हितकर जान पड़ी। अधिकांश रियासतों के भौगोलिक संबंध भारत के स्वाधीन उपनिवेश से हैं और इसलिए इस समस्या को हल करने में उसकी दिलचस्पी भी अधिक है। यह एक तरफ रियासतों के राजाओं और उनकी सरकारों की तथा दूसरी तरफ भारत सरकार की यथार्थता और उत्तरदायित्व संबंधी भावना की ही विजय है कि दोनों पक्षों को स्वीकार होने योग्य प्रवेशपत्र (Instrument of Accession) बनाया जा सका और वह भी इतना स्पष्ट और सरल कि तीन सप्ताह से भी कम समय में प्रायः सभी संबंधित रियासतों के प्रवेशपत्र तथा ''यथापूर्व'' (stand still) समझौते पर हस्ताक्षर हो सके। इस प्रकार 30 करोड़ मनुष्यों को इस उप-महाद्वीप के अधिकांश भाग की एक और अखंड राजनीतिक व्यवस्था स्थापित हो सकी है।

प्रमुख महत्व की रियासतों में हैदराबाद ही एक ऐसी रियासत है जो अभी तक शामिल नहीं हुई है। जनसंख्या, क्षेत्रफल और साधनों की दृष्टि से हैदराबाद की स्थिति अनूठी है। उसकी अपनी विशिष्ट समस्यायें भी हैं। पाकिस्तान में शामिल होने की तो हैदराबाद के निजाम की मंशा नहीं है, लेकिन वे अभी तक

[श्रीमान् गवर्नर-जनरल]

भारत में शामिल नहीं हो सके हैं। निजाम ने मुझे विश्वास दिलाया है कि विदेशी मामले, रक्षा और यातायात के तीन आवश्यक विषयों में वे उस डोमिनियन से सहयोग रखेंगे जिसके प्रदेश से उनकी रियासत घिरी है। सरकार की स्वीकृति से निजाम के साथ बातचीत जारी रखी जायेगी और मुझे आशा है कि हम संतोषप्रद समाधान ढूंढ निकालेंगे।

आज से मैं आपका वैधानिक गवर्नर-जनरल हूं और आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मुझे आज से अपने ही जैसा एक व्यक्ति समझें, जो भारत के हितों को अग्रसर करने के लिए सच्चे हृदय से प्रयत्नशील रहेगा। मैं यह देखकर अपने को सम्मानित अनुभव करता हूं कि आपके नेताओं ने मुझे आपका गवर्नर-जनरल बने रहने के लिए आमंत्रित किया है और आपने उसे स्वीकार कर लिया है। इसे स्वीकार करने में, मैं केवल इसी विचार से प्रेरित हुआ हूं कि आगे जो कठिन समय आने वाला है उसमें शायद आपकी कुछ सहायता कर सकूं। भारतीय-स्वाधीनता-कानून पर विचार करते समय आपके नेताओं ने 31 मार्च, 1948 को इस अंतरिम काल का अंत निर्धारित किया था। मैं अनुरोध करता हूं कि अप्रैल में आप मुझे मुक्त कर दें। यह नहीं है कि आपकी सेवा में रहकर मैं अपने आपको सम्मानित नहीं अनुभव करता हूं, किंतु मैं यह जरूर महसूस करता हूं कि यथासंभव शीघ्र ही भारत अपनी प्रजा में से किसी को गवर्नर-जनरल चुनने के लिए स्वतंत्र रहे। तब तक मेरी पत्नी और मैं आपके साथ और आपके बीच काम करके अपना सौभाग्य समझेंगे। सभी अवसरों पर हमारे प्रति जो समझौता, सहयोग, सच्ची सहानुभूति और उदारता की भावना व्यक्त की गई है, उसके लिए कृतज्ञता प्रकट करने को मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं।

मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता होती है कि मेरी सरकार ने (जैसा कि मुझे अब वैधानिक रूप से ऐसा कहने का अधिकार है और मुझे ऐसा कहते गर्व होता है) इस ऐतिहासिक अवसर पर कैदियों को उदारतापूर्वक क्षमा प्रदान करने का निश्चय किया है। सार्वजनिक नैतिकता और सुरक्षा को सर्वोपरि ध्यान में रखकर कैदियों की कितनी ही श्रेणियां तैयार की गई हैं और राजनैतिक उद्देश्य पर खास ध्यान दिया गया है। फौजी अदालतों से जिन सैनिकों को सजायें दी गई हैं, उनको छोड़ने में भी यही नीति बरती जायेगी।

आपके आगे कार्य महान् है। युद्ध दो वर्ष पूर्व समाप्त हो चुका है। सच तो यह है कि दो वर्ष पूर्व इसी दिन, जब मैं भारत के महान् मित्र श्री एटली के

मंत्रिमंडल वाले कमरे में था, मुझे जापान के आत्मसमर्पण का समाचार मिला था। वह कृतज्ञता तथा खुशी का क्षण था क्योंकि 6 वर्ष तक विनाश और रक्तपात होता रहा था। परंतु भारत में हमने कहीं अधिक बड़ी सफलता प्राप्त की है, जिसे ''युद्ध के बिना ही शांति-संधि'' कहा जा सकता है। फिर भी युद्धजन्य हानि के चिन्ह संसार भर में दिखाई दे रहे हैं। भारत को भी, जिसने युद्ध में वीरतापूर्ण भाग लिया था—और इसका साक्षी दक्षिण पूर्वी एशिया से अपने अनुभव के कारण मैं खुद हूं—अपनी आर्थिक व्यवस्था में असामंजस्य होने और अपने वीर योद्धाओं के हताहत होने के रूप में मूल्य चुकाना पड़ा।

राजनैतिक समस्या में व्यस्त रहने के कारण आर्थिक सुधार के काम में बाधा पड़ी है। अब राष्ट्र के सुख और समृद्धि की व्यवस्था करना, खाद्य, कपड़ा तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के अभाव की पूर्ति का प्रबंध करना और एक सामंजस्य-पूर्ण आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना आप ही का काम है। इन समस्याओं के निपटारे के लिए आपके तात्कालिक तथा पूर्ण हार्दिक प्रयत्न और दूरदर्शिता पूर्ण आयोजन की आवश्यकता है। किंतु मुझे विश्वास है, जन, साधन तथा नेतृत्व का अभाव न होने के कारण आप अपने इस कार्य में सफल हो सकेंगे।

भारत में जो कुछ हो रहा है उसका केवल राष्ट्रीय महत्व ही नहीं है। एक स्थिर तथा समृद्धशाली राज्य की स्थापना संसार की शांति के लिए सबसे अधिक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की बात है। भारत की आर्थिक और सामाजिक उन्नति, सैन्य-दृष्टि से इसकी महत्वपूर्ण अवस्थिति और उसके साधनों की दृष्टि से, इन घटनाओं का विशेष महत्व है। यही कारण है कि सिर्फ ब्रिटेन और स्वाधीन उपनिवेश ही नहीं बल्कि संसार के सब महान् राष्ट्र उत्सुकता से इस देश की प्रगति दिलचस्पी से देखेंगे और उसकी समृद्धि और सफलता की कामना करेंगे।

इस ऐतिहासिक घड़ी में हमें यह न भूल जाना चाहिए कि भारत महात्मा गांधी का—अहिंसा द्वारा उसकी स्वतंत्रता लाने वाले महान् सूत्रधार का—कितना बड़ा ऋणी है। आज उनकी अनुपस्थिति हमें खल रही है और हम उन्हें बताना चाहते हैं कि उनका ध्यान हमें कितना अधिक है।

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय, मैं आप तथा पिछली अन्तःकालीन सरकार के अन्य सदस्यों को सूचित करना चाहता हूं कि आपकी तरफ से मुझे जो सहयोग और समर्थन मिलता रहा है, उसकी मैं कद्र करता हूं।

[श्रीमान् गवर्नर-जनरल]

अपने प्रथम प्रधान मंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू के रूप में आपको साहस तथा सूझबूझ वाला एक संसार प्रसिद्ध नेता प्राप्त है। उनके विश्वास और मंत्रित्व से मुझे अपने कार्य में असीम सहायता प्राप्त हुई है। अब उनके नेतृत्व में और उन्होंने जिन साथियों को चुना है उनकी सहायता तथा जनता के सच्चे सहयोग से भारत शक्ति और प्रभावपूर्ण स्थिति प्राप्त कर सकेगा और संसार के राष्ट्रों के बीच अपना उचित स्थान भी पा सकेगा। *(अरसे तक तुमुल हर्षध्वनि)*

***अध्यक्षः** योर एक्सेलेंसी और मेम्बराने असेम्बली, मैं आपसे दरख्वास्त करना चाहता हूं कि बादशाह सलामत के पास आप इस असेम्बली की तरफ से शुक्रिया का संदेश भेज दें, उस संदेश के लिए जो उन्होंने इतनी मेहरबानी करके हमारे पास भेजा है। जिस काम में आज हम लगने जा रहे हैं उसमें उनकी हमदर्दी और मेहरबानी हमारे साथ रहेगी, यह जानकर हम इस काम को ठीक तरह से अंजाम दे सकेंगे।

अध्यक्ष का भाषण

***अध्यक्षः** मुझे सभा को यह सूचना देनी है कि फ्रांस के वैदेशिक मंत्री श्री एम॰ गिराड से भी शुभकामना का एक संदेश मिला है जो उन्होंने फ्रांस की सरकार तथा अपनी ओर से भेजा है। खेद है कि सम्वाद की इबारत मेरे पास नहीं है, पर अन्य सम्वादों के साथ, जिन्हें मैने आज सुनाया है, यह परिषद् की कार्रवाई संबंधी पुस्तिका में दर्ज कर लिया जायेगा।

योर एक्सेलेंसी, आपसे अनुरोध है कि आप श्रीमान् सम्राट को इस सभा की ओर से इसका निष्ठापूर्ण अभिनन्दन का सम्वाद तथा उनके शुभ सम्वाद के लिये जो उन्होंने महती कृपा करके हमें आज भेजा है, इसका हार्दिक धन्यवाद भेज दें। उस महान् काम को पूरा करने में, जिसे हम आज उठा रहे हैं, सम्राट के इस सम्वाद से हमें बड़ी प्रेरणा प्राप्त होगी और मुझे इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है कि हम ग्रेट ब्रिटेन से एक मित्र की तरह के सम्पर्क की बड़ी प्रसन्नता से आशा रखते हैं। मुझे आशा और विश्वास है कि सम्राट की दिलचस्पी, सहानुभूति और उनका अनुग्रह, जिससे वह सदा ही प्रभावित रहे हैं, भारत को पूर्ववत् प्राप्त होते रहेंगे, और हम उन्हें पाने योग्य होंगे।

(यह संदेश तथा अमेरिका के प्रेसीडेंट का संदेश परिषद् में पढ़े नहीं गये थे, पर कार्रवाई में शामिल कर दिये गये हैं।)

तार–ता॰ 15-8-47

मो॰ जारजेस बिडाल्ट, वैदेशिक मंत्री, पैरिस की ओर से, पं॰ जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''अपनी सरकार की ओर से तथा अपनी ओर से मैं इस ऐतिहासिक तिथि का अभिवादन करता हूं जब कि भारतवर्ष को विश्व के उन महान् स्वाधीन राष्ट्रों के समकक्ष श्रेणी में आने का गौरव प्राप्त हुआ जो शांति-स्थापन के कृत संकल्प हैं और हृदय से संसार के सभी लोगों की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। श्रीमान् से मेरा अनुरोध है कि इस अवसर पर आप हमारे इस पुनर्प्रदत्त आश्वासन को स्वीकार करें कि इन दोनों देशों की पारस्परिक मैत्री के लिए मैं सतत् प्रयत्नशील रहूंगा और इसका मुझे सर्वोपरि ध्यान है।''

अमेरिकन दूतावास

नई दिल्ली, (इंडिया)

15 अगस्त, 1947

श्रीमान्, मुझे गौरव है कि अमेरिका के राष्ट्रपति से प्राप्त निम्नलिखित संदेश को आपके पास भेजने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हो रहा है:

''इस चिरस्मरणीय अवसर पर मैं अमरीका की सरकार और उसकी जनता की ओर से आपके प्रति और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू तथा भारतीय डोमिनियन की जनता के प्रति हार्दिक शुभकामनायें प्रकट करता हूं। भारत संसार के सर्वसत्ता सम्पन्न राष्ट्रों की पंक्ति में आया है। उसके इस नये और उन्नत पद का हम स्वागत करते हैं। नये स्वाधीन उपनिवेश को अपनी सतत् मैत्री और सद्भावना का आश्वासन देते हैं और पुन: अपना यह दृढ़ विश्वास प्रकट करते हैं कि भारत संसार में शांति स्थापना और सभी लोगों की प्रगति में तत्पर रहेगा तथा संसार में पारस्परिक विश्वास और सम्मान के आधार पर आश्रित समाज की स्थापना की होड़ में विश्व के राष्ट्रों की पहली पंक्ति में खड़ा होगा। भारत के सम्मुख बहुतेरी समस्यायें उपस्थित हैं; परन्तु उसके साधन विशाल हैं और मुझे विश्वास है कि उसकी जनता और नेताओं में अपनी इन भावी समस्याओं को सुलझाने की सामर्थ्य है। आगे आने वाले वर्षों में अमरीका इस नये और महान राष्ट्र की जनता का सदा मित्र रहेगा। मेरी यह हार्दिक आशा है कि भूतकाल की भांति भविष्य में भी अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र

[अध्यक्ष]

में हम लोगों में घनिष्ट और लाभदायक सहयोग बना रहेगा और हमारे पारस्परिक संबंध घनिष्ठ और सद्भावना पूर्ण बने रहेंगे।''

इस अवसर पर भारतीय उपनिवेश के गवर्नर-जनरल का पद ग्रहण करने पर श्रीमान् को मैं बधाई देता हूं और साथ ही उच्चतम प्रतिष्ठा प्रदान करने का आपको विश्वास दिलाता हूं।

भारतीय उपनिवेश के श्रीमान गवर्नर-जनरल–हेनरी टी॰ ग्रेडी

***अध्यक्षः** इस शुभ घड़ी में जब हम स्वतंत्रता के अधिकारों को, आजादी के अख्तियारों को अपने हाथों में लेने जा रहे हैं, हमारा पहला कर्तव्य है कि हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें जिन्होंने इस दिन के लाने के लिये अपनी जिंदगी लगा दी और तरह-तरह के कष्ट सहे और मुसीबतें झेलीं।

इस ऐतिहासिक अवसर पर (इस तवारीखी मौके पर) हम अपने राष्ट्र के निर्माता महात्मा गांधी को भी अपनी भक्ति अर्पित करते हैं जिन्होंने इन कठिन दिनों में हमारी रहनुमाई की है और हमें अनुप्राणित किया है, और आज अपनी वृद्धावस्था में भी जो अधूरा रह गया है उसे पूरा करने में अपनी अद्भुत शक्ति लगा रहे हैं।

हमने आज जो स्वतंत्रता पायी है वह हमारे तप और त्याग और कुर्बानी का फल है। साथ ही हमको यह भी मानना चाहिये कि उसके लाने में संसार और दूसरे राष्ट्रों की स्थिति भी सहायक और मददगार रही है। हमें यह भी मानना चाहिये कि ब्रिटिश जाति ने भी अपने इतिहास और संस्कृति के अनुसार अपने तमुद्दन और तवारीख के मुताबिक अपने उन उदारचेता और दूरदर्शी नेताओं और राजनीतिज्ञों–अपने दूरअंदेश और फय्याज खयाल वाले लीडरों–के स्वप्नों और वचनों को पूरा किया है, जिन्होंने इस दिन की भविष्यवाणी की थी और समय-समय पर इसे लाने की प्रतिज्ञा की थी। आज हमें इस बात की खुशी है कि उस जाति के प्रतिनिधिस्वरूप नुमाइंदे की तरह हमारे बीच में वाइकाउंट माउंटबैटन आफ बर्मा और उनकी धर्मपत्नी मौजूद हैं, जिन्होंने अंतिम दिनों में इतनी मेहनत और उत्साह

के साथ काम किया है। आज से हिन्दुस्तान पर ब्रिटिश प्रभुत्व खत्म होता है और हमारा ब्रिटेन के साथ ऐसा संबंध कायम होता है जो बराबरी का है और जिसमें दोनों देशों की भलाई है और दोनों को लाभ हो सकता है।

हम जानते हैं कि देश में इस स्वतंत्रता प्राप्ति से जो उल्लास, जो खुशी और जो उत्साह होना चाहिये वह इसका बटवारा हो जाने के कारण किरकिरा हो गया है। हमारा काम है कि जो हमारे साथ रह गया है उसको हम ऐसा सुंदर, सुव्यवस्थित, सुसंगठित और समुन्नत करें कि बिछुड़े हुये प्रदेशों को फिर हमसे मिल जाना बहुत अधिक लाभप्रद मालूम हो। हम आशा करते हैं कि हम अपने व्यवहार से, अपनी कार्यदक्षता से उनको फिर अपनी ओर वापस ला सकेंगे। यह जोर जबर्दस्ती से नहीं हो सकता। जोर जबर्दस्ती का कहीं भी अच्छा अंत नहीं होता। वह एक चक्र है जिसका आदि-अंत कहीं नहीं है। हम यह उद्देश्य अपने सद्व्यवहार से पूरा कर सकते हैं। ऐसे लोग जो इस बटवारे को पसंद नहीं करते, पर जिनके घरबार उस पार में पड़ गये हैं, उनसे अनुरोध है कि वे वहां ही डटे रहें और जिस हिम्मत और उत्साह से उन्होंने स्वराज्य-प्राप्ति में काम किया है उसीसे अब भी काम लेते रहें। जो नया शासन और नई गवर्नमेंट वहां कायम हो रही है उसको हम अपना आशीर्वाद और शुभकामनायें भेजते हैं और चाहते हैं कि वह अपने उस बड़े काम में, जो आज वह शुरू करने जा रही है, पूरी तरह कामयाब होवे। हमारा पूरा विश्वास है कि वह वहां के सभी रहने वालों के साथ बिना कोई फर्क किये इंसाफ और न्याय का बर्ताव करेगी। हमारी सहानुभूति तो वहां के सब लोगों के साथ है ही। हम चाहते हैं कि वह अपनी वफादारी और अपनी हिम्मत से अपनी जगह वहां हासिल और कायम कर लेवें।

इस दिन हमें खुशियां मनानी हैं, मगर उससे भी अधिक अपनी जिम्मेदारियों को समझना है। हम गुजिश्ता को भूलें और आइंदा की ओर अपनी आंखें फेरें और ऐसा हिन्दुस्तान बनावें जिसका हम सपना देखते रहे। हमारा किसी भी विदेश के साथ कोई झगड़ा नहीं है और हम उम्मीद रखते हैं कि कोई दूसरा देश हमारे साथ झगड़ा मोल नहीं लेगा। हमारा इतिहास बताता है और हमारी संस्कृति सिखाती है कि हम शांतिप्रिय हैं, और रहें। हमारा साम्राज्य, हमारी फतह दूसरे प्रकार की रही है। हमने दूसरों को जंजीरों से, चाहे वह लोहे की हों या सोने की भी क्यों न हों, कभी बांधने की कोशिश नहीं की। हमने दूसरों को अपने साथ लोहे की जंजीरों से भी ज्यादा मजबूत मगर सुंदर और सुखद रेशम के धागे से बांध रखा है और वह बंधन धर्म का है, संस्कृति का है और ज्ञान का है। हम अब भी

[अध्यक्ष]

उसी रास्ते पर चलते रहेंगे और हमारी एक ही इच्छा और अभिलाषा रहेगी। यह अभिलाषा यह होगी कि हम संसार में सुख और शांति कायम करने में मदद पहुंचा सकें और संसार के हाथों में सत्य और अहिंसा का वह अचूक हथियार दें जिसने हमें आज आजादी तक पहुंचाया है। हमारी जिंदगी और संस्कृति में कुछ ऐसा है जिसने हमें समय के थपेड़ों के बावजूद जिन्दा रहने की शक्ति दी है। अगर हम अपने आदर्शों को सामने रखे रहेंगे तो हम संसार की बड़ी सेवा कर पायेंगे।

आज से हम कानूनी तरीके से अपने भाग्य के विधाता बने हैं और इस देश को शांत, सुखी और समुन्नत बनाने का सारा भार हमारे ऊपर आ गया है। जो स्वराज्य हमने हासिल किया है वह खोखला रह जायेगा, अगर हमने देश में रहने वाले सभी वर्ग, जाति और धर्म वाले लोगों में यह विश्वास पैदा नहीं किया कि वे यहां सुरक्षित हैं, उनकी उन्नति और तरक्की के रास्ते में कोई बाधा नहीं डाल सकता है, उनको धर्म और धर्माचार की पूरी आजादी है, उनकी भाषा और संस्कृति, जबान और कल्चर, पर कोई आघात नहीं पहुंचा सकता है, आदिम जातियों और दूसरे पिछड़े हुये लोगों की उन्नति के लिये उस समय तक विशेष आयोजन और प्रयत्न होता रहेगा—खास मदद होती रहेगी—जब तक वह सबों की बराबरी में न आ जायें, अछूतपन को सपने के संकट की तरह हम भूल गये, मजदूर और किसान और दूसरे हर प्रकार के श्रमजीवी मेहनत करने वाले किसी प्रकार से शोषित नहीं होने पायेंगे, सभी लोगों को अपने विचारों को प्रकट और प्रचारित करने का, अपने खयालों की इशायत का मौका और अधिकार है। जब इस देश में खाने के लिये पूरा अन्न होने लगेगा और फिर दूध की नदियां बहने लगेंगी। जब हमारे जवान लोग खेतों और कारखानों में हंसते-हंसते काम किया करेंगे, जब हर झोंपड़े और पल्ली में घरेलू धंधों के साथ-साथ हमारी युवतियां अपने मीठे स्वर अलापती रहेंगी। जब इस देश के सुखी घरों पर और हंसते हुये चेहरों पर सूरज और चन्द्रमा अपनी किरणें छिटकायेंगे तभी हमारा स्वराज्य सफलीभूत होगा।

काम बहुत बड़ा है, बहुत मुश्किल है और सब लोगों की सहायता और सहयोग के बिना यह पूरा नहीं हो सकता। देश के सभी लोगों से अनुरोध है कि वह इसमें पूरी सहायता करें। हम जानते हैं कि आज देश के अन्दर कई विचार-धारायें चल रही हैं। कितने ही दल हैं जो संगठित रूप से अपने विचारों का प्रचार करना और देश द्वारा उनको मंजूर कराकर उनके ही ढांचे में विधान और हमारे सामाजिक जीवन को ढ़ालना चाहते हैं। जहां एक ओर इन सबको अपने विचारों

के प्रचार का पूरा अधिकार होना चाहिये, दूसरी ओर देश को यह अधिकार है कि उनसे वह देश के प्रति सच्ची वफादारी का दावा करें और उनका फर्ज है कि वह वफादारी वे दें। हम सबको यह मानना होगा कि इस समय सबसे अधिक जरूरत निर्माण और रचना की है, संघर्ष की नहीं, ठोस तामीरी काम की है, बहस की नहीं। हम आशा करते हैं कि सभी मिल-जुलकर इस बड़े काम को पूरा करेंगे। हम चाहते हैं कि हमारे किसान ज्यादा से ज्यादा अन्न पैदा करें, कारखानों के मजदूर ज्यादा से ज्यादा माल पैदा करें और व्यवसायी और व्यापारी लोग अपनी बुद्धि और चातुरी जनता जनार्दन की सेवा में लगायें, और सबके लिये सुन्दर व्यवस्थित और सुखी जीवन, जिन्दगी का साधन, सामान जुटा दें और सबके लिये आत्मोन्नति (तरक्की) का रास्ता साफ कर दें।

जनता और जनता के प्रतिनिधियों के अलावा एक और वर्ग है जिसकी जिम्मेदारी भी कम नहीं है। वह है हमारे देश की सेना और सरकारी मुलाजिमों की। जो लोग आज तक हम पर और जन साधारण पर हुकूमत करते रहे हैं उनको अब से सेवक और खादिम का जामा पहनना होगा। हमारी फौज ने अपनी बहादुरी और युद्ध कौशल का सबूत दुनिया के अनेकों रणक्षेत्रों में दिया है। आज तक वह दूसरे प्रकार से संचालित हो रही थी। आज वह राष्ट्रीय सेना, कौमी फौज बन गयी जिसके ऊपर देश को सुरक्षित, महफूज रखने का भार होगा और जो जनता को दबाने के लिये नहीं उठाने के लिये, उन्नत करने के लिये, रखी जायेगी। अब हमारे देश के रहने वालों के लिये फौज के किसी विभाग में, चाहे वह जमीन, पानी या आसमान में काम करता हो, कोई भी ऐसी जगह नहीं जो न मिल सके। इतना ही नहीं, उनको जल्द से जल्द ऊंचे ओहदे तक पहुंचकर काम संभालना है। उसी तरह जो सरकारी मुलाजिम हैं उनको भी अब अपने को देश का शासक न मानकर देश का सेवक मानना होगा। जिस तरह स्वतंत्र देश के सरकारी मुलाजिम जनता की सेवा करते हैं उसी तरह इनको भी सेवा करनी होगी। अपनी सारी योग्यता, काबलियत और शक्ति का रुख दूसरी तरफ उनको फेरना पड़ेगा और जहां वह आज तक रोब-दाब से काम लिया करते थे वहां उन्हें अब केवल सेवा-भावना से काम करना होगा, जैसा स्वतंत्र देशों के सरकारी मुलाजिम किया करते हैं। जनता और गवर्नमेंट की तरफ से उनको भरोसा होना चाहिये कि उनके रहन-सहन के लिये देश की परिस्थिति के अनुकूल, यहां की हालत के मुताबिक जहां उनको रहना है पर्याप्त प्रबंध, काफी इंतजाम किया जायेगा।

हम उन देशी रियासतों का स्वागत करते हैं जो हमारे संघ में शामिल हो गई हैं और रजवाड़ों की जनता के प्रति हम अपनी सद्भावना प्रकट करना चाहते हैं

[अध्यक्ष]

और उनके नरेशों और रईसों को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके प्रति हमारा कोई द्वेष नहीं है, उनको चाहिये कि वह इंग्लैंड के राजा का अनुकरण करें और प्रजातंत्र का नियंत्रित अधिकार ही अपने हाथों में रखें। उनको भूलना नहीं चाहिये कि यूरोप में जहां दूसरे देशों के राज सिंहासन चकनाचूर हो गये, अंग्रेजी राजा की सत्ता दो बड़ी लड़ाइयों के बाद भी आज पहले जैसी ज्यों की त्यों खड़ी है।

विदेशों में प्रवासी भारतवासियों को, चाहे वह अंग्रेजी उपनिवेशों में बसे हैं या और जगहों में, हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके सुख-दुख में हमारी गहरी दिलचस्पी है और उनके लिये दिलों में सद्भावना है।

देश में जो अल्पसंख्यक लोग हैं उनको हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके साथ न्याय और इंसाफ का बर्ताव होगा और उनके अधिकार (हक) सुरक्षित (महफूज) रहेंगे।

विधान बनाने का काम जो बाकी है उसको जल्द से जल्द पूरा करना चाहिये ताकि हम अपने बनाये विधान के मातहत रहने लग जायें और काम शुरू कर दें। इस विधान को बनाने में सबकी सहायता आवश्यक है। ऐसा सुन्दर उसे बनाना है जिसमें जनमत प्रधान रहे और सेवा और जनता की उन्नति उद्देश्य रहे, और सबको इस बात का विश्वास रहे कि वह अपने धर्म, संस्कृति, भाषा, विचार सबको सुरक्षित रख सकते हैं और उनकी तरक्की के रास्ते में किसी किस्म की बाधा नहीं हो सकती। इसको बनाने में विदेशों के अनुभव, तजुरबा और विधान (कायदे) से हम लाभ उठायेंगे। अपनी संस्कृति और परिस्थिति से जो कुछ मिल सकता है उसे लेंगे और जहां जरूरत होगी आज की प्रचलित सीमाओं को, चाहे वह शासन-पद्धति की हो अथवा सूबाओं की, लांघकर नयी सीमायें बनायेंगे। हमारा उद्देश्य है कि हम ऐसा विधान बनायें जिसमें जनमत की प्रधानता रहे और जिसमें व्यक्ति को केवल स्वतंत्रता (आजादी) ही न मिले, पर वह स्वतंत्रता (आजादी) लोकहित (खलक की बहबूदी) का साधन (जरिया) बन जाये।

आज तक इस देश के लोग देश को आजाद करने के लिये संकल्प किया करते थे और इस कार्यसिद्धि के लिये त्याग और बलिदान की प्रतिज्ञा किया करते थे। आज दूसरे प्रकार के संकल्प और प्रतिज्ञा का दिन आया है। हममें से कोई ऐसा न समझें कि त्याग का दिन बीत चुका और भोग का समय आ गया। जो

देश को उन्नत करने का महान् कार्य हमारे सामने है उसमें आज तक हमने जितनी त्याग की भावना दिखलाई है उससे कहीं अधिक दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ तत्परता, त्याग और कार्य-पटुता दिखलाने का समय है। इसलिये एक बार फिर भी भारत की सेवा में लग जाने का संकल्प करना है और ईश्वर से प्रार्थना करनी है कि जिस तरह से उसने हमारे पहले के संकल्प को पूरा किया उसी तरह से वह इसको भी पूरा करे।

राष्ट्रीय पताका का उत्तोलन

***अध्यक्षः** अब हिज एक्सेलेंसी झंडोत्तोलन का संकेत देंगे।

(तोप की आवाज सुनाई पड़ी।)

***श्रीमान् गवर्नर-जनरलः** इमारत की छत पर झंडा फहराने का यह संकेत है।

***अध्यक्षः** अब सभा 20 अगस्त को, 10 बजे के लिये स्थगित होती है।

माननीय सदस्यगणः महात्मा गांधी की जय, पं॰ जवाहरलाल नेहरू की जय, लार्ड माउंटबैटन की जय।

इसके बाद सभा बुधवार, 20 अगस्त, सन् 1947 के प्रातः 10 बजे के लिये स्थगित हुई।